अध्याय- पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

आज की दुनिया दिन- प्रतिदिन प्रतिस्पर्धी होती जा रही है | प्रदर्शन की गुणवत्ता व्यक्तिगत प्रगति के लिए महत्वपूर्ण कारक बनती जा रही है। उत्कृष्टता विशेष रूप से,अकादमिक और प्रायः अन्य सभी क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में देखा जाता है। प्रत्येक माता–पिता की इच्छा होती है, कि उनके बच्चे उत्कृष्ट प्रदर्शन करें | इस उपलब्धि के उच्च स्तर की इच्छा से हमारे बच्चों, छात्रों, शिक्षकों, संस्थाओं और सामान्यशिक्षा प्रणाली में बहुत ही दबाव पड़ता है, तथा ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा की पूरी व्यवस्था शैक्षिक उपलब्धि के इर्द–गिर्द ही घूमती रहती है| इस प्रकार हम देखते हैं कि अधिकांश स्कूलों में केवल यही प्रयास रहता है कि वे बच्चोंकी शैक्षिक उपलब्धि की वृद्धि कैसे करें? शैक्षिक शोधकर्ताओं के लिए के लिए यह शोध का विषय है, कि कौन-से कारक छात्रों की उपलब्धि को बढ़ावा देते हैं एवं कौन से कारक अकादमिक उत्कृष्टता की दिशा में योगदान करते हैं? ऐसे प्रश्नों के उत्तर देना मानव व्यक्तित्व की जटिलता के कारण आसान नहीं हैं। उत्कृष्टता में सुधार के लिए हम प्रायः प्रयास करते हैं और तरह-तरह की युक्ति का प्रयोग करते हैं | इसलिए शोधकर्ताओं द्वारा अनेक कारकों की परिकल्पना की जाती है और शोध भी किए जाते हैं | वे विभिन्न निष्कर्ष के साथ अपने परिणाम को सामान्यीकृत करते हैं | शैक्षणिक उपलब्धि पारिवारिक वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य एवं अध्ययन की आदत से भी निर्धारित होती है |

शिशु अपने जीवन की शुरुआत माता-पिता के स्नेह और देख-रेख में आरंभ करता है एवं अन्य प्रियजन जो परिवार के साथ जुड़े रहते हैं, उनके प्यार के साथ वह बढ़ता है। जैसे-जैसे वह बढ़ता है, जीवन का प्रथम पाठ अपने परिवार से ही सीखता है और आदतों को आत्मसात करने की कोशिश करता है | परिवार के आदर्श और अपने परिवार के सदस्यों का व्यवहार आजीवन उसे प्रभावित करता

है। बच्चों की परवरिश के लिए परिवार से बेहतर कोई संस्था नहीं है। वह परिवार के सभी सदस्यों के क्रिया-प्रतिक्रिया से बहुत सी बातें सीखता है|

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि परिवार का प्रत्येक सदस्य बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं|सीखना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है | बालक अपने परिवेश तथा विद्यालय में बहुत कुछ सीखता है | परिवेश में अभिभावक, समाज तथा विद्यालय में शिक्षक विभिन्न क्रियाओं के माध्यम से उसके व्यवहार में परिवर्तनलाने का प्रयास करते हैं | इन सब क्रियाओं का प्रभाव उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है | विद्यालय का प्रत्येक प्रयास विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए होता है | विद्यालय, शिक्षक अभिभावक तथा समाज प्रत्येक इसी पर विशेष ध्यान देते हैं, कि किस प्रकार विद्यार्थियों में केवल अच्छे गुणों का ही विकास किया जाये तथा उसको शैक्षिक रूप से एक सुयोग्य नागरिक बनाये जाने हेतु प्रयास किया जाये| शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य उन परीक्षणों से है, जो छात्र के ज्ञान, बोध, कौशल आदि का मापन करते हैं | विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विभिन्न विषयों में छात्रों ने क्या सीखा है, इसका मापन करने के लिए उपलब्धि परीक्षणों का ही प्रयोग किया जाता है | अतः कहा जा सकता है कि किसी निश्चित समयावधि में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के द्वारा किसी एक या अनेक विषयों में छात्र के ज्ञान व समझ में हुए परिवर्तन का मापन करने वाले उपकरणों को उपलब्धि परीक्षण कहते हैं | उपलब्धि परीक्षण प्राय: शिक्षा उद्देश्यों पर आधारित होते हैं, तथा इनसे उद्देश्यों की प्राप्ति के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त होती है|विद्यालय, शिक्षक तथा समाज के लिए उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एक महत्वपूर्ण कारक है|

5.1 समस्या कथन

"अभिभावकीय आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन|"

5.2 शोध उद्देश्य

1. कक्षा 7 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना |

2. विद्यार्थियों की अभिभावकीय आकांक्षा का अध्ययन करना |

3. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मकअध्ययन करना |

4. ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि सम्बंधित आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना|

5 .विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके अभिभावकों की आकांक्षा के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना |

5.3 परिकल्पनाएँ

H_{01}: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

H_{02}: ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि सम्बंधित आकांक्षा के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

H_{03}: विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके अभिभावकों की आकांक्षा के मध्य कोईसार्थक सहसम्बन्ध नहीं है |

5.4 न्यादर्श

समय एवं संसाधनों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा अध्ययन हेतुविद्यालय का चयन लाटरी विधि से किया गया है | न्यादर्श के रूप में अग्रगामी हाईस्कूल पिपरी मेघे के विद्यार्थियों को लिया गया है जो कक्षा 8 में पढ़ते है और इनके ही अभिभावकों को शामिल किया गया है|

इस शोध अध्ययन में 64 विद्यार्थियों एवं उनके ही अभिभावकों को लिया गया है|

5.5 प्रयुक्त उपकरण

इस अध्ययन के अनुरूप मानकीकृत परीक्षण उपलब्ध न होने के कारण शोधकर्ता द्वारा अभिभावकीय आकांक्षा से सम्बंधित स्वनिर्मितउपकरण का उपयोग किया गया है |

5.6 अध्ययन के मुख्य परिणाम

1. A_1 ग्रेड प्राप्त करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की संख्या नगण्य है एवं4 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने A_1 ग्रेड प्राप्त किये हैं | 27 प्रतिशत ग्रामीण और 26 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने A_2 ग्रेड किये हैं | जिससे हम यह कह सकते हैं कि A_2 ग्रेड प्राप्त करने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में केवल 1 प्रतिशत का अंतर है | 21 प्रतिशत ग्रामीण एवं 39 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने B_1 ग्रेड प्राप्त किये हैं, जहाँ 18 प्रतिशत का अंतर दृष्टिगोचर होता है | 36 प्रतिशत ग्रामीण एवं 19 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने B_2 ग्रेड प्राप्त किये हैं | यहाँ दोनों विद्यार्थियों के मध्य 17 प्रतिशत का अंतर है | C_1 ग्रेड प्राप्त करने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संख्या समान है जहाँ दोनों की भागीदारी 12 -12 प्रतिशत है | C_2 ग्रेड मात्र एक ग्रामीण छात्र ने प्राप्त किया है जबकि कोई भी शहरी छात्र C_2 ग्रेड नहीं प्राप्त किया है |

   जहाँ हम यह देखते हैं कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि में कोई विशेष अंतर नहीं है यहाँ दोनों क्षेत्र के छात्रों ने अपनी उपलब्धि में अच्छा निष्पादन किया है |

2. उच्च आकांक्षा रखने वाले 24.24 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावक हैं, सामान्य आकांक्षा रखने वाले 63.63 अभिभावक हैं एवं 12.12 प्रतिशत अभिभावक निम्न आकांक्षा रखते हैं|

3. उच्च आकांक्षा रखने वाले32.25 प्रतिशत शहरी अभिभावक हैं, सामान्य आकांक्षा रखने वाले भी 32.25 प्रतिशत अभिभावक हैं एवं 35.4 प्रतिशत अभिभावक निम्न आकांक्षा रखते हैं | यहाँ हम यह देखते हैं कि उच्च आकांक्षा एवं सामान्य आकांक्षा रखने वाले अभिभावकों की संख्या समान है|

4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है

5. ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि सम्बंधित आकांक्षा में सार्थक अंतर है|

6. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके अभिभावकों की आकांक्षा के मध्य निम्न स्तर का सहसंबंध है|

5.7 शोध के निष्कर्ष

A_1 ग्रेड प्राप्त करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की संख्या नगण्य है एवं4 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने A_1 ग्रेड प्राप्त किये हैं | 27 प्रतिशत ग्रामीण और 26 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने A_2 ग्रेड किया है | जिससे हम यह कह सकते हैं कि A_2 ग्रेड प्राप्त करने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में केवल 1 प्रतिशत का अंतर है| 21 प्रतिशत ग्रामीण एवं 39 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने B_1 ग्रेड प्राप्त किया है, जहाँ 18 प्रतिशत का अंतर दृष्टिगोचर होता है| 36 प्रतिशत ग्रामीण एवं 19 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने B_2 ग्रेड प्राप्त किया है यहाँ दोनों विद्यार्थियों में मध्य 17 प्रतिशत का अंतर है| C_1 ग्रेड प्राप्त करने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संख्यासमान है जहाँ दोनों भागीदारी 12 -12 प्रतिशत है | C_2 ग्रेड मात्र एक ग्रामीण छात्र ने प्राप्त किया है जबकि कोई भी शहरी छात्र C_2 ग्रेड नहीं प्राप्त किया है |

ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों की आकांक्षा का हम तुलना करते हैं तो दोनों के माध्य में मात्र1.54 का अंतर दिखाई देता है | किन्तु हम उच्च, सामान्य एवं निम्न आकांक्षा स्तर में देखते हैं तो हमें कुछ भिन्नता दिखता है | अधिकांश अभिभावकीय आकांक्षाका स्कोर 54 से 58 के मध्य है प्राप्त आंकड़ों के अनुसार सबसे उच्च अभिभावकीय आकांक्षा कास्कोर 66 ही है किन्तु सबसे निम्न अभिभावकीय आकांक्षा का स्कोर 32 है क्योंकि कुछ उत्तरदाताओं ने कुछ प्रश्नों को छोड़ दिया है| शोधार्थी ने जिन अभिभावकों की आकांक्षा सबसे निम्न है एवं जिन अभिभावकों की आकांक्षा सबसे उच्च है उनसे पुनः आकड़ों के संग्रह के बाद मिला गया और उनसे पूछा गया कि आप अपने बच्चे के प्रति इतनी

निम्न स्तर की आकांक्षा क्यों रखते हैं तो पाया गया कि कुछ बच्चों की सामाजिक आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय है, किन्तु कुछ अभिभावक ऐसे भी मिले जिनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति तो बहुत ही अच्छी है, परन्तु उनकी अभिभावकीय आकांक्षा का स्कोर बहुत निम्न है, शोधार्थी द्वारा पूछने पर यह पता लगा कि उनके बच्चे ही पढ़ने में बहुत अच्छे नहीं हैं जिससे वे अपने बच्चे से इस प्रकार की आकांक्षा रखते हैं कि सामाजिक जीवन निर्वहन के लिए उनकी क्षमता एवं योग्यता के अनुसार नौकरी मिल जाय | जिन अभिभावकों की सबसे उच्च स्तर की आकांक्षा है, उनसे मिलने पर यह पता चला कि उनके बच्चे दिन-प्रतिदिन अपने परीक्षाओं ने अच्छा निष्पादन करते हैं और उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति भी बहुत अच्छी थी | किन्तु कुछ ऐसे भी अभिभावक मिले जिनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति तो बहुत अच्छी नहीं थी किन्तु उनकी आकांक्षा उच्च स्तर की थी कारण यह था कि उनके बच्चे पढ़ने में बहुत ही अच्छे थे|

यहाँ ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक नहीं है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एक समान है एवं ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों की आकांक्षा में सार्थक अंतर है| विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके अभिभावकों की आकांक्षा के मध्य निम्न स्तर का सहसंबंध है|

5.8 शैक्षिक निहितार्थ

अभिभावकों को व्यक्तिगत भिन्नता का ध्यान रखते हुए प्रत्येक बच्चे से एक समान शैक्षिक उपलब्धि की आकांक्षा नहीं करना चाहिए| बच्चों की क्षमता एवं रुचि के अनुसार उनके कैरियर चुनाव की स्वतंत्रता देना चाहिए| हमें प्रत्येक बच्चे से डॉक्टर, इंजीनियर एवं आई.ए.एस बनने की अपेक्षा नहीं करना चाहिए | अभिभावकों को हमें परामर्श देना चाहिए ताकि वे अपने बच्चों की तुलना अन्य बच्चों से करें | स्कूल स्तर पर कैरियर चुनाव के लिए व्यवसायिक निर्देशन की व्यवस्था होनी चाहिए| दूसरी ओर हम देखते हैं कि शैक्षिक उपलब्धि की वृद्धि के चक्कर में आज भी हमारी शिक्षा प्रणाली रटंत

पद्धति को जन्म दे रही है | इसके लिए हमें संरचनावादी उपागम से अध्ययन अध्यापन पर जोर देना चाहिए | अगर हमारा बच्चा परीक्षा में कम अंक लाता है तो हमें डाटना नहीं चाहिए बल्कि अगली बार अच्छे करने के लिए उसका उत्साहवर्धन करना चाहिए | विद्यालय में निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए | दिव्यांग बच्चों को भी हमें अपने स्कूल में आत्मसात करना चाहिए | व्यक्ति किसी भी स्थान पर हो, किसी भी उम्र का हो, स्त्री हो या पुरुष अथवा विकलांग हो, प्रत्येक जीवन की एक योजना है, एक उद्देश्य है, एक मूल्य है | यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि विकलांग व्यक्ति सर्वाधिक प्रेरणास्पद व्यक्ति होते हैं | उन्हें समान अवसर देना चाहिए और अपनी अलग क्षमताओं के साथ वे सामान्य व्यक्तियों से अधिक शाक्तिशाली तथा क्षमतावान सिद्ध होंगे और यदि हम सभी इसे स्वीकार कर लेते है तो समाज में परिवर्तन हो सकता है |

अंततः इस शोध अध्ययन से निष्कर्ष निकल कर आता है कि हमें अभिभावकों को परामर्श देने की आवश्कता है एवं अध्ययन- अध्यापन की प्रणाली में सुधार लाने की आवश्कता है|

5.9 भावी शोध हेतु सुझाव

अध्ययन के परिणाम एवं व्याख्या के आधार पर हम निम्नलिखित समस्यायों पर भविष्य में शोध कर सकते हैं –

I. विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार को लेते हुए हम अभिभावकीय आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन कर सकते हैं |
II. आदिवासी एवं जनजातीय अभिभावकों की आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं
III. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राज्य बोर्ड के विद्यार्थियों की उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं |
IV. अध्यापकों की आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन कर सकते हैं|

V. केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं राज्य विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिभावकीय आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं|

VI. महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय के विद्याथियों की अभिभावकीय आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं|

VII. कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अभिभावकीय आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं|

VIII. किसी विशेष सामाजिक वर्ग को लेते हुए अनुप्रस्थ अनुसन्धान (Cross- Sectional research) या आनुक्रमिक अनुसंधान(Longitudinal research) कर सकते हैं|

****